Code - 22

विषय : संस्कृत साहित्य

निर्धारित समय : 3 घंटे मात्र

कुल अंक : 150 अंक मात्र

नोट : कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए । प्रत्येक प्रश्न के अंक समान (30) हैं। प्रश्न क्रमांक 1 अनिवार्य है। खण्ड 'I' से किन्हीं दो प्रश्नों तथा खण्ड 'II' से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के खण्डों का उत्तर एक साथ दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्ही चार के उत्तर दीजिए: $(4X7\frac{1}{2}=30)$

(अ) निम्नलिखितेषु संस्कृतेन सूत्रोल्लेखपूर्वकं विग्रहप्रदर्शनसहितं समासनाम उल्लिख्यताम्:
वागर्थाविव, पञ्चगङ्गम्, द्वयङ्गलम्, रूपवद्भार्यः, अर्धपिप्पली।

(आ) भारतीयशिक्षापरम्परायां वर्णाश्रमव्यवस्थायाः योगदानं प्रतिपादयत।

(इ) अधोलिखितेषु वाक्येषु वाच्यपरिवर्तनं विधीयताम्:

(i) बलिं याचते वसुधाम्।
(ii) ग्रामम् अजां नयति।
(iii) रामः विद्यालयं गच्छेत्।
(iv) त्वं दुग्धं पिब।
(v) मया प्रारब्धं त्विह भुज्यताम्।

(ई) निम्नलिखितेषु कयोश्चिद् द्वयोः सन्दर्भनिर्देशपूर्वकं व्याख्या विधीयताम्:

(i) अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन्पूर्वमर्षत् ।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ।।

(ii) नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ।।

(iii) गर्भेश्वरत्वमभिनवयौवनत्वमप्रतिमरूपत्वममानुषशक्तित्वञ्चेति महतीयं खल्वनर्थ परम्परा। सर्वाविनयानामेकैकमप्येषामायतनम्, किमुत समवायः ।

(उ) अधोनिर्दिष्टेषु कयोश्चिद् द्वयोः विषययोः टिप्पणी संस्कृतभाषया लेख्या:

(i) भर्तृहरिकृतं नीतिशतकम्
(ii) विष्णुशर्मणा कृतं पञ्चतन्त्रम्
(iii) बाणभट्टकृतं हर्षचरितम्

(ऊ) पतञ्जलेः अष्टाङ्गयोगस्य लोकव्यवहारोपयोगित्वं संसाध्यताम्।

(ए) संस्कृतकाव्यानां पर्यावरणविषये प्रासंगिकता प्रतिपाद्या।

<u>खण्ड I</u>

2.(अ) निम्नलिखित अवतरण के आधार पर इसके नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर

संस्कृत में दीजिए: (15)

आलोकयतु तावत् कल्याणाभिनिवेशी लक्ष्मीमेव प्रथमम्। इयं न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। सरस्वतीपरिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिंगति जनम्। गुणवन्तमपवित्रमिव न स्पृशति। उदारसत्वममङ्गलमिव न बहु मन्यते। सुजनमनिमित्तमिव न पश्यति। अभिजातमहिमिव लङ्घयति। शूरं कण्टकमिव परिहरति। दातारं द:स्वप्नमिव न स्मरति। विनीतं पातकिनमिव नोपसर्पति। मनस्विनमुन्मत्तमिवोपहसति। परस्परविरुद्धञ्चेन्द्रजालमिव दर्शयन्ती प्रकटयति जगति निजचरित्रम्।

(i) का परिचयं नं रक्षति?

(ii) लक्ष्म्या: निजचरित्रस्य तुलना केन सह कृता?

(iii) लक्ष्मीं: दातारं किमिव न स्मरति?

(iv) 'परस्परविरुद्धम्' इत्यस्य क: अर्थ:?

(v) 'मनस्विनमुन्मत्तमिवोपहसति' इत्यस्य क: अभिप्राय:?

(आ) निम्नलिखित अवतरण का संस्कृत में अनुवाद कीजिए: (15)

जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आयी है उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भावयोग कहते हैं तथा कर्मयोग और ज्ञानयोग के समकक्ष मानते हैं। कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ सम्बन्धों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य की भाव भूमि पर ले जाती है। यहाँ जगत् की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है।

3. निम्नलिखित में से किसी एक पर 250 शब्दों में संस्कृत में निबन्ध लिखिए: (30)

(अ) यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्।

(आ) पुरुषार्थाणां स्वरूपं जीवने तदुपयोगित्वं च।

(इ) संस्कृतवाङ्मये विज्ञानपरम्परा।

(ई) विश्वबन्धुत्वे वेदान्तदर्शनस्य प्रासंगिकता।

4. वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित पदार्थो का निरूपण कीजिए। (30)

<u>खण्ड II</u>

5. संस्कृत आख्यायिका साहित्य के उद्भव तथा विकास पर प्रकाश डालिए। (30)

6. 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' उक्ति की सप्रमाण समीक्षा कीजिए। (30)

7. मृच्छकटिकम् के आधार पर तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का वर्णन कीजिए। (30)